

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मसमान का तुलनात्मक अध्ययन

शोधार्थी

प्रज्ञा चंद्राकर

भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग)

शोध निर्देशक

डॉ. स्वाति पाण्डेय

सह - प्राध्यापक (शिक्षा संकाय)

भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग)

सार

प्रस्तुत अध्ययन का मूल उद्देश्य दुर्ग जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों के आत्म-सम्मान का तुलनात्मक विश्लेषण करना था, जिसमें यह ज्ञात करना प्रमुख था कि विद्यालय के प्रकार—शासकीय एवं अशासकीय—के आधार पर विद्यार्थियों के आत्म-सम्मान में क्या कोई सार्थक अंतर विद्यमान है। अध्ययन की जनसंख्या दुर्ग जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के सभी विद्यार्थियों पर आधारित थी, जिनमें से सरल यादृच्छिक विधि द्वारा कुल 300 विद्यार्थियों (150 शासकीय एवं 150 अशासकीय) को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया। विद्यार्थियों के आत्म-सम्मान स्तर का मापन करने हेतु रोज़ेनबर्ग आत्म-सम्मान मापनी का उपयोग किया गया। अनुसंधान में सर्वेक्षण पद्धति अपनाते हुए दोनों प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों के औसत स्कोर के अंतर की जाँच के लिए t-test का प्रयोग किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि शासकीय और अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के आत्म-सम्मान में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। विशेष रूप से, अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का आत्म-सम्मान, शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक पाया गया, जो इस बात का संकेत है कि विद्यालयीय संसाधन, प्रेरक वातावरण, अधिगम अवसर तथा शिक्षक-विद्यार्थी संवाद आत्म-सम्मान के निर्माण को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं।

मुख्य शब्द : आत्म-सम्मान, शिक्षक-विद्यार्थी संवाद विद्यालयी वातावरण, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, पारिवारिक पृष्ठभूमि, मित्र-समूह और सामाजिक-आर्थिक स्तर

भूमिका

व्यक्ति के व्यक्तित्व के समग्र विकास में आत्म-सम्मान एक अत्यंत महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक घटक माना जाता

है। आत्म-सम्मान वह आंतरिक मूल्यांकन है जिसके आधार पर व्यक्ति स्वयं के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक धारणा विकसित करता है। शिक्षाशास्त्र और मनोविज्ञान दोनों ही क्षेत्रों में यह सिद्ध किया गया है कि आत्म-सम्मान न केवल विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित करता है, बल्कि उनके सामाजिक समायोजन, निर्णय-क्षमता, आत्म-नियंत्रण, लक्ष्य-निर्धारण और भविष्य के प्रति दृष्टिकोण पर भी गहरा प्रभाव डालता है। उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी शारीरिक, बौद्धिक और भावनात्मक परिवर्तनों के दौर से गुजरते हैं, इसलिए इस अवस्था में आत्म-सम्मान का स्तर विशेष रूप से संवेदनशील होता है और यह निर्धारित करता है कि विद्यार्थी शैक्षणिक एवं सामाजिक परिस्थितियों से किस प्रकार निपटते हैं।

विद्यालयी वातावरण, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, पारिवारिक पृष्ठभूमि, मित्र-समूह, सामाजिक-आर्थिक स्तर और विद्यालय का प्रकार (शासकीय/अशासकीय) जैसी कारक आत्म-सम्मान के स्तर में अंतर उत्पन्न करते हैं। कई अध्ययनों से स्पष्ट हुआ है कि जिन विद्यार्थियों का आत्म-सम्मान उच्च होता है, वे चुनौतियों का सामना अधिक आत्मविश्वास के साथ करते हैं, जबकि निम्न आत्म-सम्मान वाले छात्र अपेक्षाकृत अधिक तनाव, चिंता, असुरक्षा और शैक्षणिक हिचक अनुभव करते हैं। चूँकि दुर्ग जिला शहरी-ग्रामीण, सामाजिक-आर्थिक तथा शैक्षणिक विविधताओं से युक्त क्षेत्र है, अतः यहाँ के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्म-सम्मान में किस प्रकार का अंतर विद्यमान है—यह अध्ययन करना अनुसंधान की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक एवं उपयोगी है।

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में संसाधनों, शिक्षण-पद्धति, विद्यालयी ढाँचे, शिक्षक-विद्यार्थी अनुपात, अनुशासन व्यवस्था तथा प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में दिखाई देने वाला अंतर विद्यार्थियों के आत्म-सम्मान के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अतः यह अध्ययन उच्च माध्यमिक स्तर के कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों के आत्म-सम्मान का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिसमें यह ज्ञात किया गया है कि क्या विद्यालय के प्रकार—शासकीय एवं अशासकीय—में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्म-सम्मान में सांख्यिकीय रूप से कोई महत्वपूर्ण भिन्नता पाई जाती है।

संबंधित शोध अध्ययन

शर्मा (2021) ने दिल्ली के उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों में आत्म-सम्मान का अध्ययन करते हुए पाया कि उच्च संसाधन वाले विद्यालयों के विद्यार्थियों में आत्म-सम्मान का स्तर अपेक्षाकृत अधिक था।

कौर एवं सिंह (2022) के अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि पारिवारिक समर्थन का आत्म-सम्मान पर प्रत्यक्ष प्रभाव

पड़ता है, तथा निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में आत्म-सम्मान का औसत स्तर अधिक है।

गुप्ता (2023) ने मध्यप्रदेश के विद्यार्थियों पर किए अध्ययन में पाया कि शैक्षणिक वातावरण आत्म-सम्मान का प्रमुख निर्धारक है।

थॉमस एवं बेकर (2021) द्वारा किए गए विदेशी अध्ययन में स्कूल-क्लाइमेट और सकारात्मक शिक्षक-संवाद को आत्म-सम्मान के सबसे मजबूत पूर्वानुमानक बताए गए।

लोपेज़ (2022) के अध्ययन में यह निष्कर्ष आया कि सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में सहभागिता रखने वाले विद्यार्थियों का आत्म-सम्मान उच्च पाया गया।

जनसंख्या (Population)

इस अध्ययन की जनसंख्या दुर्ग जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के कक्षा 9वीं में अध्ययनरत सभी विद्यार्थी हैं।

न्यादर्श (Sample)

अध्ययन हेतु कुल 300 विद्यार्थियों का नमूना निर्धारित किया गया, जिसमें **150 विद्यार्थी शासकीय विद्यालयों** से तथा **150 विद्यार्थी अशासकीय विद्यालयों** से चयनित किए गए। दोनों प्रकार के विद्यालयों से विद्यार्थियों का चयन पूर्णतः निष्पक्ष एवं प्रतिनिधिक स्वरूप सुनिश्चित करने के लिए **सरल यादृच्छिक नमूना पद्धति (Simple Random Sampling)** का प्रयोग किया गया, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि प्रत्येक विद्यार्थी के चयन की समान संभावना रहे और नमूना वास्तविक जनसंख्या का उपयुक्त प्रतिनिधित्व कर सके।

अनुसंधान पद्धति (Method)

यह अध्ययन सर्वेक्षण अनुसंधान पद्धति (Survey Method) पर आधारित है।

उपकरण (Tool Used)

अध्ययन में आत्म-सम्मान के मापन हेतु रोज़ेनबर्ग आत्म-सम्मान मापनी (Rosenberg Self-Esteem Scale) का उपयोग किया गया, जिसमें 10 कथन होते हैं तथा अंकन 0–30 की सीमा में किया जाता है।

सांख्यिकीय विश्लेषण (t-Test Analysis)

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के प्राप्त औसत अंक, मानक विचलन तथा t-मान की गणना की गई।

तालिका क्रमांक 1

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के प्राप्त औसत अंक, मानक विचलन तथा t-मान

समूह	N	Mean	SD	t-value	Interpretation
शासकीय विद्यालय	150	18.40	4.10	3.52	सार्थक
अशासकीय विद्यालय	150	20.15	3.85		

व्याख्या

प्रस्तुत तालिका में दोनों समूहों (शासकीय व अशासकीय विद्यालय) के नमूना आकार (N), औसत स्कोर (Mean), मानक विचलन (SD) तथा t-परीक्षण का परिणाम दर्शाया गया है। शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का औसत आत्म-सम्मान स्कोर **18.40** (SD = 4.10) है जबकि अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का औसत स्कोर **20.15** (SD = 3.85) पाया गया। अर्थात: अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों का औसत स्कोर शासकीय विद्यार्थियों के औसत से **1.75 अंक** अधिक है।

समूहों के मध्य अंतर की सांख्यिकीय परीक्षा हेतु किए गए t-test का मान **t = 3.52** (df = 298) निकलकर आया, जिसका p-मान बहुत छोटा रहा ($p < 0.001$), अतः यह अंतर **सांख्यिकीय रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण (highly significant)** है। सरल शब्दों में कहा जाए तो—डेटा यह दर्शाते हैं कि दुर्ग जिले में अध्ययनित कक्षा 9 के विद्यार्थियों में **अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का आत्म-सम्मान शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में स्पष्ट रूप से अधिक है**, और यह अंतर संयोग द्वारा नहीं बताया जा सकता। मानक विचलन के मूल्यों (4.10 व 3.85) से पता चलता है कि शासकीय समूह में अंक थोड़ी अधिक विचरणशीलता (variability) दर्शाते हैं जबकि अशासकीय समूह थोड़ी अधिक सुसंगतता दिखाता है। केवल सांख्यिकीय महत्व पर्याप्त नहीं; व्यावहारिक महत्व (practical significance) की जाँच के लिये **Cohen's d** भी उपयोगी है — यहाँ $\text{Cohen's } d \approx 0.44$, जो मध्यम प्रभाव आकार (moderate effect) बताता है। इसका अर्थ यह है कि समूहों के बीच पाया गया अंतर न केवल सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है, बल्कि व्यावहारिक रूप से भी मध्यम स्तर का प्रभाव दर्शाता है।

निष्कर्षतः:

- अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का आत्म-सम्मान शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक पाया गया।
- अंतर दोनों समूहों के लिये न केवल सांख्यिकीय रूप से प्रमाणित ($t(298)=3.52, p < 0.001$) बल्कि Cohen's $d \approx 0.44$ के अनुसार व्यवहारिक दृष्टि से मध्यम प्रभाव भी दर्शाता है।
- शैक्षिक नीतिनिर्माताओं एवं विद्यालय प्रबंधन के लिये सुझाव है कि शासकीय विद्यालयों में आत्म-सम्मान संवर्धन के उद्देश्य से संरचनात्मक सुधार—जैसे संसाधन सुदृढीकरण, काउंसलिंग सेवाएँ, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ एवं शिक्षक-प्रशिक्षण—अति आवश्यक हैं ताकि विद्यार्थियों के आत्म-मूल्यांकन में सुधार लाया जा सके।

निष्कर्ष (Conclusion)

अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि दुर्ग जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों में आत्म-सम्मान का स्तर विद्यालय के प्रकार के आधार पर भिन्न पाया गया। अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का आत्म-सम्मान औसत रूप से अधिक निकला, जबकि शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का आत्म-सम्मान अपेक्षाकृत कम पाया गया। इससे संकेत मिलता है कि विद्यालय का वातावरण, उपलब्ध संसाधन, शिक्षक-विद्यार्थी संवाद, प्रतिस्पर्धात्मक अवसर तथा विद्यालय की संरचनात्मक सुविधाएँ विद्यार्थियों के आत्म-सम्मान को प्रभावित करती हैं। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि सकारात्मक शैक्षणिक परिवेश और प्रेरक वातावरण आत्म-सम्मान के विकास में निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

सुझाव (Suggestions)

1. विद्यालयों में छात्रों के लिए **परामर्श एवं मार्गदर्शन सेवाओं** को मजबूत किया जाए।
2. शिक्षक-विद्यार्थी सकारात्मक संवाद को प्रोत्साहित करने हेतु नियमित **इंटरैक्टिव गतिविधियाँ** आयोजित की जाएँ।
3. विद्यालयों में **सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों** की उपलब्धता बढ़ाई जाए।
4. छात्रों में आत्म-समर्थन, आत्म-विश्लेषण और आत्म-विश्वास विकसित करने हेतु **वर्कशॉप/सत्र** आयोजित किए जाएँ।

5. अभिभावकों को जागरूक कर पारिवारिक वातावरण को अधिक सहयोगात्मक बनाने का प्रयास किया जाए।

शैक्षिक उपादेयता (Educational Implications)

यह अध्ययन शैक्षिक योजनाकारों, विद्यालय प्रशासकों एवं शिक्षकों के लिए महत्वपूर्ण संकेत प्रदान करता है कि आत्म-सम्मान विद्यार्थियों के समग्र विकास का प्रमुख आधार है। इससे प्राप्त निष्कर्ष शैक्षणिक कार्यक्रमों को इस प्रकार रूपांतरित करने में सहायक हो सकते हैं कि विद्यालयों का वातावरण अधिक समावेशी, प्रेरक एवं सहयोगात्मक हो। शिक्षक इस अध्ययन के आधार पर ऐसे शिक्षण-अनुभव विकसित कर सकते हैं जो विद्यार्थियों को अपनी क्षमताओं को पहचानने, आत्म-विश्वास बढ़ाने और सकारात्मक आत्म-धारणा निर्मित करने में मदद करें। विद्यालय-स्तर पर आत्म-सम्मान संवर्धन कार्यक्रमों के आयोजन, जीवन-कौशल शिक्षा तथा काउंसलिंग सेवाओं को मजबूत करके विद्यार्थियों के मानसिक एवं शैक्षणिक विकास को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

संदर्भ-ग्रंथ (References)

1. रोसेनबर्ग, एम. (1965). समाज और किशोर आत्म-छवि।
2. कूपरस्मिथ, एस. (1967). आत्म-सम्मान के पूर्ववर्ती।
3. शर्मा, आर. (2021). किशोर आत्म-सम्मान अध्ययन।
4. कौर, पी., और सिंह, जे. (2022). विद्यालय का वातावरण और आत्म-सम्मान।
5. गुप्ता, एस. (2023). आत्म-सम्मान को प्रभावित करने वाले शैक्षिक कारक।
6. लोपेज़, ए. (2022). विद्यालय का वातावरण और आत्म-सम्मान।
7. थॉमस, जी. (2021). छात्र आत्म-सम्मान पर तुलनात्मक अध्ययन।
8. सिंह, ए. (2018). शैक्षिक मनोविज्ञान।
9. चौहान, एस. (2019). उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान।
10. बेस्ट, जे.डब्ल्यू., और काह्न, जे.वी. (2009). शिक्षा में अनुसंधान।